गुरुवाणी

समाज को एक अच्छी व्यवस्था, सुव्यवस्था देने से बड़ा कोई धर्म नहीं हो सकता। हमारा ध्यान इस ओर ही होना चाहिये कि हम समाज को किस प्रकार की व्यवस्था प्रदान कर रहे हैं।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक २, वाराणसी। शुक्रवार ३० जनवरी २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

सच्ची साधना

सच्चाई, ईमानदारी, निष्ठा, बिना भेदभाव छल कपट या बिना बनावट या आडम्बर के किये गये कृत्य या कर्म को सच्ची साधना की संज्ञा दी जा सकती है। सच्ची या सत्य का मतलब बिना कुछ मिलावट किये, ज्यों का त्यों तथा साधना का सीधा सरल अर्थ होता है, किसी सद्प्रयोजन या सद्लक्ष्य की प्राप्ति हेतु किया गया विशेष आचरण या प्रयत्न, जिससे कर्ता स्वयं को सुघड़, सतपात्र एवं सुयोग्य बनाता है, तथा अनवरत अभ्यास से अन्ततः अपने निर्दिष्ट लक्ष्य को ससमय प्राप्त कर लेता है, साधना का अर्थ बड़ा व्यापक है, इसे महज पूजा-पाठ, जप-ध्यान, मंत्रसिद्धि, वाक्-सिद्धि या किसी विशेष क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त कर लेने के दायरे में ही सीमित नहीं किया जा सकता। साधना तो विश्व के हर क्षेत्र में मनुष्यों द्वारा किये गये उनके निरन्तर-निराभिमानिता, निस्पृहता के साथ किये गये कार्य के फलस्वरूप समाज को प्रदत्त सद्फल का नाम है। मनुष्य मात्र साधना का एक साधन है, जैसे किसी सुदूर देश की यात्रा पर आप निकल पड़े हों, तो यह आपका स्थूल शरीर उस यात्रा में आपके रथ की भाँति आपको निर्दिष्ट मार्ग पर सतत गतिशील रखता है। विश्व के हर क्षेत्र में साधना या कर्मठता का बोलबाला है चाहे कोई प्रखर प्रचण्ड संत हो, अनुयायी हों, वैज्ञानिक हों, चिकित्सा विज्ञानी हो, अन्तरिक्ष या खगोलीय अन्वेषणकर्ता हो सभी के कर्म को साधना की श्रेणी में आबद्ध किया जाता है, यहाँ तक कि प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्तकर्ता एक विद्यार्थी को भी सच्चे साधक की श्रेणी में रखा जाता है तथा ऐसे साधक के लक्षणों को भी हमारे ग्रन्थों में मुनियों, मनीषियों द्वारा प्रतिपादित किया गया है, **''काग चेष्टा बको ध्यानम्'' श्वान निद्रा तथैव च, अल्पहारी गृही त्यागी विद्यार्थी पंचलक्षणम्** यानी एक सच्चे विद्यार्थी या साधक को उसके अध्ययन काल में अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिए उपर्युक्त समस्त गुणों से आच्छादित होना ही पड़ेगा तथा जितने अनुपात में ये विशेष गुण विद्यमान रहते हैं, उतना ही उत्कृष्टता उसके विद्या-अर्जन में आती जाती है, जिसके सापेक्ष वह अपने समकक्ष अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अधिक या कम योग्य कहलाने का अधिकारी होता है।

गृहस्थ आश्रम में तो साधना का अपरिमित महत्व है जीवन के प्रत्येक अमूल्य क्षणों के सार्थक सदुपयोग करते रहने का ही दूसरा नाम साधना है, साथ ही यदि यह सदुपयोग सच्चे मन से हो जाय, यानी जिसके करने में, अनुपालन में, हमें निरन्तर प्रसन्नता, एक अजीब सुख मिलता रहे, आनन्द की प्रतीति हो उसे ही सच्ची साधना कहते हैं। यानी निरन्तर विकार दोष से रहित होने का उपक्रम, सद्लक्ष्य साथ ही प्रतिक्षण मर्यादित आचरण, अनुशासित एवं समयबद्ध जीवन-दर्शन के साथ यात्रा का नाम सच्ची साधना है, जिसके उपरान्त हमें वह तत्व, वह यथार्थ वह फल उतनी मात्रा में प्राप्त हो जाता है जिसके हम अधिकृत होते हैं। जीवन के हर क्षेत्र में विशेष कार्य के लिये एक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है चाहे वह अध्यापन हो, चिकित्सा हो अथवा मैकेनिक का कार्य ही क्यों न हो, इसी प्रशिक्षण काल का नाम साधना काल है, अन्तरिक्ष यात्रियों को इसीलिये अत्यन्त कड़े प्रशिक्षण से गुजारा जाता है ताकि वे हर अजीबोगरीब स्थिति का सामना करने की क्षमता रखते हों तथा इसके लिये उनका चुनाव या पात्रता भी देखी जाती है। इसी प्रकार साधना का चाहे कोई भी क्षेत्र हो, उसमें सच्चाई की सुगन्ध अवश्य ही चार चाँद लगा देती है। साधना का क्षेत्र प्रत्येक स्त्री-पुरुष या व्यक्ति के अपने मनोभाव के अनुरूप होता है, स्वर साधना का क्षेत्र हो या वाद्य संगीत का क्षेत्र हो, सभी में उभयनिष्ठ कारक ही प्रभावशाली होते हैं, जैसे कि 'अघोर वचन शास्त्र के द्वितीय अध्याय' के एक सौ आठ माणिक्यों में इसे सहज ही प्रस्तुत किया गया है ताकि व्यक्ति विशेष चाहे वह जिस सन्मार्ग का सद्पथिक हो उसे अपनी यात्रा सुखद एवं मनोरंजक लगे, बशर्ते वह इन गुणों को धारण कर ले, जैसे किसी सैन्य अधिकारी अथवा सैन्यकर्मी को अत्यन्त कड़े प्रशिक्षण के पश्चात् उसे एक-एक अस्त्र-शस्त्र के प्रयोग एवं उनकी बारीकियों को विशेषज्ञों द्वारा अवगत कराया जाता है। साथ ही उन्हें इस प्रशिक्षण के दौरान, शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ एवं दक्ष रखने हेतु नाना प्रकार के यत्न करने पड़ते है ताकि वह सैन्यकर्मी आवश्यकता पड़ने पर अपने लक्ष्य में शत प्रतिशत खरा उतरे। इसी भाँति मनुष्य को उनके इस अमूल्य जीवन में जहाँ आसुरी प्रवृत्तियाँ पग-पग पर इस सांसारिकता के माया-मोह, राग-द्वेष, दम्भ-कपट के रूप में विद्यमान है, उन्हें भी परास्त करते हुए अपने-अपने क्षेत्र में अग्रणी होने का नुस्खा ''अघोर वचन शास्त्र'' के द्वितीय अध्याय में सारगर्भित तौर पर उपलब्ध है जिसमें सच्ची साधना के गुणों को धारण कर ही उस ओर सरलता से अग्रसर होने का पथ-प्रदर्शन किया गया है, यथा साधक को सरल, शील, शालीन, सक्षम, विराट संकल्प शक्तिवाला, शाक्त, सत्यवादी, निराभिमानी, निरहंकारी, निर्भीक, निष्कष्ट, निर्लोभी एवं निरन्तर अभ्यासी होना चाहिए। उसे भूत की चिन्ता किये बिना, अतीत की अग्नि में जले बिना केवल वर्तमान में जीना चाहिए, क्योंकि वर्तमान ही उसका वर्तमान है, जो क्षण-क्षण अतीत या भूत होता जा रहा है तथा भविष्य पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है।

जैसा कि उपरिवर्णित है अलग-अलग व्यक्तियों के लिये अलग-अलग क्षेत्रों में साधना को अपनाना श्रेयस्कर होता है, किसी का अंधानुकरण आपको अंधविश्वास की खाई में गिरा देगा, अस्तु स्वाभाविक रूप से आपके सदेच्छा के अनुरूप आपको अपनी आत्म प्रतिक्रिया के अनुसार रुचिकर अथवा सुगम मार्ग का चयन करना होता है। सच्ची साधना के लिये मनुष्य को स्वयं के रहन-सहन, आचार-विचार, आहार-विहार के मामले में बड़ा ही अनुशासनिक होना पड़ता है। अन्यथा मन की चंचलता हर स्थिति में आपके व्यक्तित्व को प्रकट कर ही देती है, अतः साधक को अपनी विशुद्ध साधना की उपलब्धि हेतु साधना काल में ऋतु भुक्, मितभुक् हितभुक् यानी ऋतु के अनुसार, मात्रा के अनुसार एवं रुचि के अनुसार अनुपान प्राप्त करना श्रेयस्कर बताया गया है। बिना यथोचित प्रयास या कर्म के फल की इच्छा हमको आपको मुँगेरी लाल के हसीन सपनों या शेख चिल्ली की श्रेणी में ही ले आकर खड़ा कर देती है। अतः यह प्रत्येक व्यक्तित्व के धारणा शक्ति पर निर्भर है कि वह कितनी शक्ति सामर्थ्य से अपने को सुसज्जित कर लेता है एवं तदनुसार गमन करता है इसके विपरीत प्रकृति के विपरीत कोई आचरण या कार्य हमें दुर्गति की ओर धकेल देते हैं अस्तु संघर्ष में आनन्द की अनुभूति, समस्याओं के समाधान में धैर्य रखकर पुरुषार्थ करते रहने को ही सच्चे साधक की सच्ची साधना कहते हैं।

शेष पृष्ठ दो पर

राष्ट्र-ऋण

जब तुम देश का, राष्ट्र का अन्न पिण्ड खाते हो, आवश्यकता पड़ने पर, अपने प्राणों का मोह त्याग कर, अपने आपको भी देश और राष्ट्र की बलिवेदी पर चढ़ा दो।

उपर्युक्त क्रान्तिकारी वाणी किसी अन्य के नहीं बल्कि महान विचारक, समाज सुधारक, राष्ट्रवासियों की व्यथा से दु:खी पूज्य अवधूत भगवान राम जी के हैं, जो दिनोदिन प्रासंगिक होता जा रहा है। विगत २६ जनवरी को हर्षोल्लास के साथ राष्ट्र का ६६वाँ गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया, सौभाग्य से अमेरिका जैसे विकसित, कम आबादी वाला तथा अत्यन्त समृद्धशाली राष्ट्र के राष्ट्रपति माननीय श्री बराक हुसैन ओबामा नई दिल्ली के पारम्परिक परेड में मुख्य अतिथि के रूप में सपत्नीक शामिल हुए। अपने तीन दिवसीय प्रवास के अन्तर्गत दिये गये व्याख्यानों में उन्होंने न केवल भारत के आध्यात्मिक पुरोधा स्वामी विवेकानन्द को नमन किया बल्कि इस राष्ट्र के अनेकता में एकता तथा विविधताओं के बावजूद राष्ट्र के विकास हेतु तत्परता पर भी खुशी जाहिर की एवं राष्ट्र में कलंक की भाँति फैलती आतंकवाद के जड़ों पर भी सामूहिक प्रहार हेतु कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किये जाने पर बल दिया। यद्यपि उन्होंने स्वयं को भी रंगभेद एवं नस्लभेद के दंश से अछूता नहीं माना तथा इस बात पर जोर दिया कि किसी राष्ट्र की खुशहाली उस देश के महिलाओं एवं बच्चों की खुशहाली तथा उनकी सुरक्षा पर निर्भर करती है, न कि खुशहाली को। उस राष्ट्र के मात्र भौतिक समृद्धि से तौला जा सकता है। साथ ही उन्होंने हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी द्वारा उठाये गये बेटी बचाओ, बेटी-पढ़ाओं, स्वच्छता अभियान आदि की भी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

यद्यपि हमारे परम पूज्य वर्तमान पीठाधीश्वर जी के द्वारा भी अमेरिका की यात्रा की जा चुकी है एवं उनकी वाणी में इस देश को बर्बरता से समृद्धि को प्राप्त कर लिया जाना कहा गया है। सौभाग्य से भारतवर्ष को समय-समय पर ऋषियों, महर्षियों, महामानवों द्वारा संवारा एवं सजाया जाता रहा है। इसी क्रम में समाज के विभिन्न वर्गों में विभिन्न कालखण्ड में अघोरेश्वर द्वारा अवतरित होकर कल्याण की वर्षा की जाती रही है एवं भारतीयता की दैवीय मानवतावादी संस्कृति की पूँजी से समाज को सींचा जाता रहा है। आज भी यदि हमारे नवयुवकों, ललनाओं के द्वारा अपनी समृद्धिशाली संस्कृति को अक्षुण्ण रखा जाय, दहेज को त्याज्य किया जाय, समाज में महिलाओं का सम्मान किया जाय तथा पश्चिम की देखा देखी मादक द्रव्यों एवं अत्याधुनिक रहन-सहन, आडम्बर, थोथी तड़क-भड़क, लिप्सा तथा भौतिकता से परहेज किया जाय तो वास्तव में हमारा जीवन धन्य धन्य हो जायेगा। हम अपने को सच्चे अर्थों में अघोरेश्वर के अनुयायी कहलाने के अधिकारी होंगे क्योंकि राष्ट्र ऋण से उऋण होना प्रत्येक भारतवासी का प्रथम कर्त्तव्य बताया गया है जो माता-पिता, समाज एवं गुरु ऋण से कतई कमतर नहीं है। अस्तु समरसता, राष्ट्र प्रेम एवं पारस्परिक सहयोग एवं सहकार की भावना बढ़ाकर ही हम वास्तव में राष्ट्र ऋण से उऋण होने के सुपथ की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

यह ध्यातव्य है कि आश्चर्यजनक रूप से उपर्युक्त समस्त कार्यक्रम जो आज राष्ट्रीय स्तर पर चलाये जा रहे है। उन सभी कार्यक्रमों को दशकों पूर्व से सर्वेश्वरी समूह के श्रद्धालुओं की टोलियों द्वारा गुरु निर्देश के अन्तर्गत अपनाया जाता रहा है। पूज्य अवधूत भगवान राम जी द्वारा प्रतिपादित उन्नीस सूत्रीय कार्यक्रमों में इन सभी तथ्यों को पूर्व में ही समोविशत किया जा चुका है तथा अघोरेश्वर की कृपा से राष्ट्रीय स्तर पर भी उन्हीं बिन्दुओं को लागू कर समाज को समुन्नत करने का प्रयास जारी किया गया है। इससे भारतवर्ष के स्वर्णिम भविष्य की परिकल्पना भी शनै: शनै: मूर्त्त रूप ले रही है। जिसे महाकाल की ही प्रत्यक्ष लीला कही जा सकती है।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

सच्ची साधना

इस मृत्युलोक में जहाँ जीवन क्षणभंगुर एवं नश्वर है तथा मृत्यु एक सच्चाई एवं शाश्वत तथ्य है हम विलक्षणतापूर्वक इसी जीवन में स्वर्ग एवं नर्क का अनुभव करते हैं, यह जीवन तो किसी के लिये सम या समतल नहीं होता, चाहे वह समाज का राजा श्रेणी का व्यक्ति हो या रंक श्रेणी का मानव हो, उसके कर्मानुसार प्रारब्धानुसार रुचिनुसार परिवर्तन होना अपरिहार्य है। अत: औघड़ अघोरेश्वरों द्वारा इसीलिये सतत पुरुषार्थ करते रहने का उपदेश किया गया है। आलसी को, प्रमादी को सम्मान नहीं मिलता है और तो और उसे पृथ्वी का भार बताया गया है अद्यपि कुछेक अघोर गृहस्थ साधक भी कभी-कभी निराशाजनक स्थिति का सामना करने को बाध्य होते है, जब उनके मनोनुकूल सिद्धि की प्राप्ति नहीं होती, इसमें भी उस अज्ञात अघोरेश्वर की ही कृपा समझनी चाहिए क्योंकि गुरु माँ की दूरदर्शिता प्रत्येक साधक के भविष्य को सुविचारित कर निर्धारित करती रहती है। बच्चा तो स्वाभाविक रूप से कौतुहलवश चाँद की ही माँग अपनी मातृशक्ति से करने लगता है या अग्नि में तृप्त किसी लालिमा लिये हुए लौह धातु को ही देखकर उठा लेने के लिए मचल उठता है, लेकिन वात्सल्यमयी माँ उसे बड़े प्रेम से, पुचकार कर, दुलारकर, विरत करती हुई बड़ा करती है तथा बड़े यत्न से उसके बाल्यावस्था को सम्हालती है ताकि वह किसी गम्भीर आघात से सर्वथा वंचित रहे तथा उसकी जानकारी उस साधक को तब होती है जब वह अपने ध्यानावस्था अथवा चैतन्यता को प्राप्त होता है, फलस्वरूप माँ गुरु के प्रति उसकी

शेष पृष्ठ तीन पर

अनन्य दिवस कार्यक्रम

इस वर्ष दिनांक १९ जनवरी २०१५ दिन सोमवार को संस्थान के विभिन्न शाखाओं में बड़े ही धूमधाम से अनन्य दिवस समारोह का आयोजन किया गया। क्रींकुण्ड स्थल शिवाला, वाराणसी में सैकड़ों भक्तजनों की उपस्थिति में साफ-सफाई, पूजा-पाठ के साथ ही भगवान अवधूत राम जी का प्रयाग प्रवास एवं अनन्य दिवस पर चर्चा की गयी। इसके साथ ही उ0प्र0 में कार्यरत विभिन्न शाखाओं यथा लालगंज (आजमगढ़), गाजीपुर, बसखारी (अम्बेडकर नगर), रायबरेली, गोरखपुर, फैजाबाद, रेनुकूट (सोनभद्र), बिहार प्रान्त में भोजपुर, गुंडी, मोहनियाँ, सासाराम, अहिनौरा, औरंगाबाद, पटना आदि पर तथा झारखण्ड में अवस्थित शाखायें धनबाद, बोकारो, जमशेदपुर, सिमडेगा, डाल्टेनगंज, नगर उटारी, गढ़वा, जपला आदि पर साथ ही मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ की सभी विभिन्न शाखाओं में पर भी उपरोक्तानुसार बड़े ही हर्षोल्लास के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। अन्त में प्रसाद वितरण एवं भंडारा का भी आयोजन सम्पन्न हुआ। इसी क्रम में अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान तथा अघोर सेवा मण्डल के संयुक्त बैनर तले गाजीपुर जनपद के रामपुर मांझा कुटिया पर एक दिन पूर्व से ही भजन-कीर्तन एवं भंडारा का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

समारोह के मुख्य दिवस दिनांक १९.०१.२०१५ को कुटिया के प्रांगण में स्थानीय एवं सुदूर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग, देशभक्ति कार्यक्रमों का सफल मंचन किया गया। जिसे स्थानीय श्रद्धालुओं भक्तों द्वारा लाभ उठाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री विजय देव यादव जी, विधायक की उपस्थिति अन्त तक बनी रही।

समारोह के द्वितीय चरण में एक बौद्धिक व्याख्यान का भी आयोजन किया गया। जिसमें ब्रह्मनिष्ठ श्रद्धालु भक्तों सर्वश्री रमेश जी, मान्धाता राय जी एवं कुटिया के वर्तमान संत श्री कामेश्वर सिंह (बाबू) के अतिरिक्त श्री सी०एन० ओझा के द्वारा भी अनन्य दिवस पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर क्रींकुण्ड स्थल के व्यवस्थापक ब्रह्मनिष्ठ श्री अरुण सिंह जी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। सारगर्भित रूप से धन्यवाद ज्ञापन ब्रह्मनिष्ठ श्री रणजीत सिंह, एडवोकेट के द्वारा प्रस्तुत किया गया।

अन्त में विद्यालयों के शिक्षकों के साथ ही बच्चों को उनके सफल प्रस्तुति हेतु भव्य पुरस्कार वितरण किया गया एवं विशाल भंडारा के साथ कार्यक्रम की सम्पन्नता की गयी।

सच्ची साधना

द्वितीय पृष्ठ का शेष

आस्था दिनोदिन और प्रगाढ़ होती जाती है तथा अपने आपको वह धन्य-धन्य मानने लगता है। अघोर के सघन वन में शेर एवं हिरण दोनों को ही स्वस्थ एवं जीवित रखने की परम्परा है। यदि इसमें कोई भी अपने कर्त्तव्य पथ से किंचित विचलित अथवा वंचित होता है तो उसे उसका खामियाजा भी भुगताना पड़ता है यानी या तो शेर भूखों सो नहीं सकता या हिरण की कुलाचे भरने की कोताही उसे मौत के मुँह में ही धकेलेगी इस अधोगति से दोनों की ही सुरक्षा की जाती है।

अत: एक सच्चे साधक को अपने साधना काल में पूर्णत: समर्पित होना पड़ता है, उसे अपने भावों का अर्पण करना श्रेयस्कर होता है। आधे अधूरे मन से प्रारम्भ की गयी साधना का फल भी तद्नुसार ही मिलता है क्योंकि किसी भी क्षेत्र में की जाने वाली साधना में साधक को धैर्यवान, तपोनिष्ठ बनकर स्वयं को तपाना पड़ता है, उसकी साधना में निरन्तरता, अविच्छिन्नता, सुदीर्घता तथा **''एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति''** की एकाग्रता का समावेश होता है। साधक के हृदय क्षेत्र में दूर-दूर तक निराशा, असफलता का कोई स्थान नहीं होता, यदि क्षणिक व्यवधान आता भी है तो वह उसके प्रचण्ड शक्ति संकल्प की आँच में ठहर नहीं पाता, साथ ही साधक को साध्य हासिल करने के उपरान्त दिखावट या बनावट का उससे कोई रिश्ता नहीं रहता, वह विशुद्ध प्राकृतिक कस्तूरी हो जाता है जिसके सान्निध्य में, सम्पर्क में आने पर अन्य जीव या व्यक्ति को अन्तत: सद्प्रेरणा मिलती है। सच्चे साधक को समाज में अपना प्रभुत्व, स्थापत्य या वर्चस्व का प्रदर्शन करने की फुर्सत ही नहीं होती न तो किंचित इस ओर उसका आकर्षण ही होता है, क्योंकि वह ऐसे सुधारस का पान करता है जिसमें किसी की हेठी करना, अपने को ऊँचा दिखाने या किसी प्रकार की स्पर्धा, द्वेष, होड़, तुलना आदि की गुजांइश ही नहीं होती। एक सच्चा साधक बच्चे की भाँति सतत संवेदनशील होता है। वह विशुद्ध दयावान व करुणा करने वाला होता है, उसका मूल्यवान क्षण कभी बर्बाद नहीं होता, वह सदा अपने साध्य हेतु सतत प्रयत्नशील होकर, कार्य करता रहता है, वह बड़ा ही नाप, तौलकर बोलता है, जिससे सर्वकल्याण का प्रस्फुटन होता रहता है, उसे ज्ञानी कहलाने या अपने साध्य की प्राप्ति हेतु समाज से सम्मान पाने की इच्छा बिल्कुल नहीं होती, वह सदैव **''सुखे-दुखे समेकृत्वा लाभालाभौ जया जय:''** की स्थिति में विचरण करता है उसे अपने अन्त:करण की आवाज स्पष्ट सुनाई देती है, वह सांसारिक चकाचौंध तथा आपाधापी से अप्रभावित रहता है, उसके चाल-चलन, बातचीत कर्त्तव्य पालन में समयबद्धता का समन्वय रहता है, सच्चे साधक का प्रत्येक कार्य एक लक्ष्यबद्ध ढंग से सम्पन्न किया जाता है। उसे अपने साध्य के प्रति संशय बिल्कुल नहीं होता वह प्राकृतिक रूप से स्वभावत: सदाचारी बन जाता है, वह ऐसा चुम्बक होता है जिसके चुम्बकत्व से समाज को अव्यक्त रूप से प्रत्यक्षत: लाभ मिलता रहता है। एक सच्चे साधक की साधना में प्रयत्न, पुरुषार्थ के साथ ही प्रार्थना का भी संगम रहता है, उसकी अन्तर्रात्मा की डोर सदैव शक्तिशाली अज्ञात के हाथ होती है। वह किसी भी परिस्थिति में अपने को अकेला नहीं पाता न तो दीनता-हीनता या पलायनता का ही उसके साधना काल में या उसके पश्चात् ही उसके जीवन में कोई स्थान होता है, वह निर्द्वन्द, बेफिक्र अलमस्त, औलिया, औघड़ के अनुयायी की भाँति निर्भय होकर अपने मार्ग पर गमन करता रहता है। सौभाग्य एवं ऐश्वर्य उसके पीछे-पीछे चलने को बाध्य होते हैं। यद्यपि एक सच्चे साधक को प्रारम्भ से लेकर साधना की प्राप्ति तक एक-एक कदम बढ़ाकर अभीष्ट की सिद्धि करनी पड़ती है। उसे कूद फाँद अथवा शार्टकट में कत्तई विश्वास नहीं होता, वह सच्चे सद्फल की लगन रखता है, वह सदा आत्मज्ञान के चक्षु को जाग्रत रखता है। उसके सामीप्य एवं सानिध्य में साधारण व्यक्तित्व के व्यक्ति को असाधारण दिव्यता की अनुभूति होती है। इसीलिये हम पाते हैं कि सांसारिक साधारण मनुष्य यदि चलते-फिरते मानव रूपी शरीरधारी शिवशंकर की अचानक भी एक झलक या दर्शन पा जाता है तो उसका अंतस संतोष-सुख, शांति के सुखद हवा के झोंकों का अनुभव करता है तथा उसकी इच्छा पुन: पुन: दर्शन की होती है, जिसकी निरन्तरता होने पर अन्तत: उसकी आनन्ददायक छाया से अपने को जोड़ने के लिये व्याकुल हो जाता है तथा सारूप्य तथा सायुज्य प्राप्त करने में लग जाता है, उस चुम्बकत्व से प्रभावित होकर वह भी अपने में स्थायी निखार लाता है, छोटी-छोटी चीजे उसे व्यथित नहीं कर पाती, बल्कि वह अन्य दु:खी प्राणियों के रक्षार्थ अपने को प्रस्तुत करने लगता है एवं जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के पश्चात् वह निर्विकार होकर मस्त हो जाता है। यही समस्त लक्षण एक सच्चे साधक के सतपथ के पथिक के एवं साधुओं की होती है जो दु:ख, पीड़ा, मान-अपमान, धन, दरिद्रता आदि के परे होते हैं, जो अद्वितीय अद्भुत होते हैं, वे सांसारिक सघन वन में शेर की भाँति बिहरते एवं विचरण करते रहते हैं।

इसीलिये उचित यही है कि हम अपने पूरी क्षमता से अपना कर्म करें, पुरुषार्थ करें, जीवन में कृत अपराधों, गलतियों के लिये प्रायश्चित करें, अघोरेश्वर से क्षमा माँगे, उसकी पुनर्रावृत्ति कभी न हो पाये इसके लिये कटिबद्ध हों। अपने साधन क्षेत्र में पवित्रता को समावेशित करें जिससे दिनोंदिन हम सबमें आत्मबल, मनोबल, परमार्थ के प्रकाश की दिव्यता का अवतरण हो। हम अपने इस चंचल मन को अनुशासन में रख सकें, समस्याओं के निर्भीक सामना हेतु तैयार रहे ताकि इस अथाह संसार के भवसागर में हम उस मानिन्द निहंग की तरह जीवन यापन करें जिसे अपने ऊपर अथाह जल एवं आसमानी तरंगों की चिन्ता नहीं रहती बल्कि वह दिनोंदिन एक निर्भीक शक्तिशाली जल-जीव के भाँति आनन्द का अनुभव करते हुए जीवन यापन करता हुआ सच्चा साधक सिद्ध होता है।

माघ मेला शिविर, प्रयाग

अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान क्रींकुण्ड, वाराणसी द्वारा माघ मेला के अन्तर्गत प्रयाग में स्थापित शिविर के माध्यम से श्रद्धालुजनों एवं भक्तगणों की उपस्थिति में अभ्यागतों एवं नि:सहाय, गरीबों के मध्य कम्बल वितरण एवं भंडारा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अनन्य दिवस के अवसर पर प्रभातफेरी एवं सैकड़ों श्रद्धालुओं के द्वारा जयघोष करते हुए अघोरेश्वर के वचनों के पम्पलेट वितरित किये गये। अघोर साहित्य से युवा समाज को अनवरत रूप से अवगत कराते हुए समाज में व्याप्त नशाखोरी, दहेज आदि कुप्रथाओं के समूल विनाश हेतु कार्यक्रम आयोजित किया गया है। अघोर स्वयंसेवकों द्वारा समस्त आवश्यक सामग्रियों का वितरण कार्य भी किया जा रहा है।

कुम्भ महापर्व नासिक

समस्त श्रद्धालुजन एवं भक्तों को सादर सूचित किया जाता है कि अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान क्रींकुण्ड, वाराणसी द्वारा कुम्भ पर्व के अवसर पर नासिक में अगस्त २०१५ में कुम्भ पर्व को परम्परानुसार मनाने का निर्णय किया गया है। भक्तों, श्रद्धालुओं के प्रवास हेतु शिविर कैम्प के नियत स्थान एवं तिथि की घोषणा कालान्तर में की जायेगी।

निश्छल जीवन

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

चार पद सिद्धियाँ किसे कहते हैं? ये सिद्धियाँ बड़े ही निश्छल एवं निर्भीक जीवन जीने वाले व्यक्तियों को प्राप्त होती है। निश्छल कौन होता है? निश्छल वही होता है जो कुकृत्य काया नहीं होता हैं उसके जीवन में किसी प्रकार की आसुरी प्रवृत्ति नहीं होती।

नवरात्रि के प्रथम तीन दिन महकाली की उपासना के हैं। इस हृदय की जो कला है उसकी छाया से हमलोगों का चित्त दूषित हो जाता है। नवरात्रि के प्रथम तीन दिनों में हम अपने दूषित चित्त पर छाये बादल को उपासना द्वारा छांटते हैं। जब चित्त निर्मल हो जाता है तो उसके बादके तीन दिनों में लक्ष्मी का आविर्भाव होता है। ६ दिनों की भगवती की आराधना के बाद, अगले तीन दिनों में सरस्वती की आराधना और उपासना होती है जिसमें बैखरी या वाणी में ओज आता है, माधुर्य आता है, कुशलता आती है। साधक के चित्त और विचार पवित्र होते हैं और वार्ता करने की वीणता प्राप्त होती है। ये सभी गुण उन्हें ही प्राप्त होते हैं जिन्हें दम्भ नहीं होता। गत वर्ष हमारे खेत में धान की फसल बहुत अच्छी दिखलाई पड़ती थी। जब मैंने ग्राम सेवक से यह बात कही तो उन्होंने कहा धान में 'पसरा' रोग लग गया है। मैंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। समय आया। मैंने बनारस में सुना कि जिन धान के पौधों में काफी अच्छी बालें थी वे पहले ही झड़ गये। अत: दुश्शील पुरुषों का स्वास्थ्य, वस्त्र इत्यादि अच्छे होने पर भी उनकी कुकृत्य काया पहचान में आ जाती है। मैंने कई बार खलिहान में धान के दानों को देखकर सोचा कि वे पुष्ट हैं किन्तु ओसाई की जाने पर उनमें से अधिकांश उड़ उड़ कर एक ओर जमा हो गये और उनकी ढेर लग गई। खोखले धान के दोनों को अन्त में सड़ा दिया गया। यही स्थिति और गति निकृष्ट कार्य करने वाले, निकृष्ट जीवन जीने वाले, सुरापान करने वाले, असमय मौज मजा लूटने वाले लोगों की होती है। जब महापुरुषों के शरीर और विचारों की हवा नहीं लगती है तो वे खोखले धान के दानों की तरह कबाड़खाने के पात्र बन जाते हैं। दुश्चरित्र, कुकृत्यकाया, अपराध प्रवृत्ति के व्यक्ति कपट, चतुराई मुस्कुराहट और मधुरी वाणी से अपने वास्तविक चरित्र पर पर्दा डाले रहते हैं किन्तु बाद में उनका पर्दाफाश हो जाता है। वे जर्जर काया हो जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों के जीवन मं बराबर निराशा छायी रहती है। उनसे पशु, श्वान इत्यादि अच्छे हैं। चूँकि वे भोग अपनी जाति में करते हैं, रजस्वला तथा गर्भवती स्त्रियों के साथ भोग नहीं करते और समय काल की पहचान परख रखते हैं। जबकि आज के मानव इतने गिरे हुए हैं कि वे भगवती और भगवान को भी धोखा देते हैं। यदि ऐसा व्यक्ति स्वयं अपने आप पर दया नहीं करता तो कोई अन्य उस पर दया नहीं कर सकता। हाकिम, भगवान् भगवती तथा महापुरुषों की वाणी और संकेतों को अंगीकार कर उन पर आचरण किये बगैर, सिर्फ उनके दर्शन करने से दया नहीं होती। यदि दोषी व्यक्ति ने अपने आप में सुधार लाया है और हाकिम तथा न्यायाधीश को यह बात जच जाती है तो वे उसे मौत की सजा न देकर कम सजा देते हैं या किसी किसी मामले में चेतावनी देकर छोड़ देते हैं। जब हम अपने अपराध को महसूस करेंगे, उसके लिये ग्लानि करेंगे, तभी अपराध क्षम्य होता है। अपराधकर्मियों से सान्निध्य रखने में चित्त को गलत दिशा में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है, जबकि महापुरुषों के साथ उठने बैठने और सत्संग करने से उन्हीं के विचारों के अनुरूप भावनाओं का चित्त में उदय होने लगता है। अपराधी मनोवृत्ति के व्यक्तियों के साथ रहने से चार पद सिद्धियाँ नहीं मिलती। हमारे सभी अच्छे-बुरे कर्मों का पता माँ भगवती को रहता है। बन्द कमरों में किये गये हमारे कुकृत्यों की खबर ईश्वर और माँ भगवती के दूत, वायु एवं दिशायें उन्हें देते रहते हैं। माँ भगवती मच्छर का रूप धारण कर हमारे सभी अपराधकर्मों को देखती रहती है। 'मसक समान रूप कपि धरी' यदि आपको भय होगा तो आप ईश्वर या माँ भगवती की शरण में जायेंगे। यदि अपने आपसे भी लज्जा संकोच हो जाय तो मानव जीवन पाने का उद्देश्य सिद्ध हो जाता है। मानव जन्म सुर दुर्लभ जीवन है। 'बड़े भाग मानुष तन पावा।' बहुत से देवता मानव शरीर में प्रवेश कर सौरमण्डल बनाते है। मनुष्य अपने पुरुषार्थ से बहुत कुछ कर सकता है। एक बार त्रेता युग माही शम्भु गये कुंभज ऋषि पाही।' स्पष्ट है कि शिव मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट कर ऋषियों के आश्रम मं विचरण करते थे। हम इस मानव जन्म की उपेक्षा, अपव्यय में लगे हुए हैं। हमारा जीवन दु:ख-क्लेश से जर्जर हो जाता है। हम कीट पतंग की तरह जी रहे हैं। महात्माओं ने कहा कि जो वीर्य का संग्रह करता है, उसकी रक्षा करता है, वह बृहस्पति और शुक्राचार्य की तरह स्वस्थ मस्तिष्क, स्वस्थ स्वभाव और स्वस्थ चित्त वाला होता है। ऐसा व्यक्ति क्षीण काय और क्षीण मन नहीं होता। जो व्यक्ति, अप्राकृतिक कर्म से वीर्य को नष्ट करता है, उसका चित्त, उसकी इन्द्रियाँ और उसका मस्तिष्क रोगग्रस्त हो जाता है। उसका जीवन नीरस हो जाता है। वह मृत्यु को अपने घर आमंत्रित कर अल्पायु हो जाता है। जो वीर्य की रक्षा करता है, अपने पर दया करता है, शरीर के तत्त्वों का अवलम्बन लेकर चित्त को शुद्ध रखता हैं, वह मनोमय शरीर से बैठे-बैठे दूर दराज के स्थानों और दृश्यों को देखने लगता है। इसी तरह से जब हम महापुरुषों की वाणियों को सुनने समझने लगते हैं तो हमारा ज्ञानचक्षु खुल जाता है और अनुमान ज्ञान से हम दूर-दूर की चीजों को देखने लगते है। अनुमान ज्ञान पहले होता है। उसके बाद पंच पद सिद्धि होती है। इस सिद्धि की उपलब्धि होने पर हम एक ही साथ भिन्न-भिन्न स्थानों में उपस्थित रहते हैं। इन सिद्धियों को प्राप्त करने वाला व्यक्ति इन्हें आप को नहीं बतलायेगा। वह आप से बार-बार नहीं मिलेगा और कहेगा चूँकि इससे इसका ओज और महत्व घट जायेगा। सुकृत्य काया के व्यक्ति कहीं कहीं और बहुत ही कम संख्या में होते हैं। कीट पतंग बहुसंख्यक होते हैं। जो वस्तुत: मनुष्य है, मानवीय गुणों से सम्पन्न है वह सभी अपराध कर्मों से विरत रहता है, घबड़ाता है, स्वप्न में भी उसके जीवन में ऐसी बातें नहीं आती। इसके विपरीत जो कुकृत्य काया है, वह समाज में स्थान नहीं पाता उसका मनोबल ऊँचा नहीं रहता, वह अपना मस्तक ऊँचा नहीं रख सकता।

अन्त में मैं आपसे यह निवेदन अवश्य करूँगा कि महामाया हमें बराबर ढूँढ़ रही हैं। वह खोज रही हैं, ऐसे व्यक्तियों को जो मानवीय गुणों से सम्पन्न है हमारा ही अपराध हमसे पर्दा किये हुए हैं। हमारी साधना ऐसी है कि महामाया की, जो प्रकाश किरणों में रहती है, सशरीर भी देख सकते हैं, उससे वार्तालाप भी कर सकते हैं। उनके साथ उठ बैठ भी सकते हैं। जो महापुरुष उनसे भक्ति करता है वह उन्हें इन वृक्षों में, उनके पत्तों में, किरणों की रश्मियों में उनके कम्पन में उन्हें देख लेता है, हृदयंगम करता है। इसे सहज समाधि कहते हैं। मैं आपसे बात करता हूँ, आपकी बातें सुन रहा हूँ, किन्तु अभ्यन्तर से शून्य हूँ। साईकिल चालकों की तरह, उपासकों की बाह्य क्रिया कलापों से उनके अभ्यन्तर की क्रिया को नहीं देख सकते। जब आप शुद्ध काया, शुद्ध चित्त होकर, उनके अभ्यन्तर की बातों को जानने के लिए उत्सुक होंगे, परिश्रम और अध्यवसाय करेंगे, तो जान पायेंगे। बाह्य व्यवहार में महापुरुष सामान्य व्यक्ति की तरह हैं किन्तु उनके बाहरी व्यवहार से उनके अभ्यन्तर की गतिविधियों को नहीं जाना जा सकता। उनमें निश्छलता, शुद्ध चित्तता पायी जाती है। उनका जीवन निरपराध है। उनमें मनस्विता है। वे मानवीय गुणों को अंगीकार-स्वीकार करते हैं, स्नेह-प्यार देते हैं और साथ ही साथ आदर देते हैं। ये सभी गुण भगवती के आगमन के द्योतक हैं। उनका आगमन वायु के कम्पन की तरह है। वे मंत्रज्ञ के पास प्रविष्ट करती हैं जिसकी काया स्वरूप इन्द्रियाँ नियंत्रण में हैं। तब वह जैसा चाहता है करता-कराता है। उसका जीवन बड़ा ही रम्य और स्वाभाविक है। उसका पारिवारिक जीवन सुखी सम्पन्न होता है। थोड़ा होने पर भी अधिक मालूम पड़ता है। जो अमैत्री करते हैं, ईर्ष्या द्वेष करते हैं, वे निकट ही रखे जल नहीं पी पाते, बिछे बिस्तर का उपभोग नहीं कर पाते। मालूम होता है उन पर विष तुल्य अग्नि ज्वाला की वर्षा हो रही है। सज्जन पुरुषों को महापुरुषों के साथ बहुत दिन और समय व्यतीत करने पर भी समय का ज्ञान नहीं होता, किन्तु दुश्शील जीवन यापन करने वाले लोगों को यह सुख सुलभ नहीं हो पाता। हम अपराध करते हैं, अपराधकर्मियों की संगत करते हैं। कलवार यदि दूध की टोकरी लेकर घूमे तब भी यही मालूम होगा कि वह शराब ही लेकर घूम रहा है। गृहस्थ के लिये शराब बहुत ही हानिकारक है। शराब के दुष्परिणामों को जानने के बाद मैंने इसका त्याग कर दिया। 'जब से सूझें तब से बूझें।' ऐसा व्यक्ति बहुत जल्दी और सच्चे हृदय से महामाया के गौरव को प्राप्त कर लेता है।

शेष अगले अंक में

अघोर सूत्र

- अघोर सहज का मार्ग है।
- वाणी की साधना को ही तो वागीश्वरी की उपासना कहते हैं।
- मुड़िया साधु! 'शील' और 'शालीनता' की साधना मनुष्य को ईश्वर बना देती है।
- ध्रुव-संकल्प और अभ्यास से अनजान को जाना जा सकता है।
- बिना प्रयोजन के कुछ भी अभिव्यक्त नहीं करना चाहिये।

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी